धर्म, कला एवं संस्कृति का संगम

काशी या वाराणसी भारत ही नहीं, संसार के प्राचीनतम नगरों में से एक है। बाबा विश्वनाथ की इस नगरी में पतित पावनी गंगा द्वितीया के चंद्रमा के समान आकार बनाती आगे बढ़ती है। यही एक ऐसी नगरी है, जहाँ गंगा की धारा अनादि काल से एक ही स्थान पर प्रवाहित होती आ रही है। गंगा के बाएँ तट पर मनोरम ढ़ंग से बसा, यह प्राचीन नगर भारतीय धर्म एवं संस्कृति का जीता- जागता संग्रहालय है। वैष्णव, शैव, तांत्रिक, बौद्ध, जैन आदि सभी संप्रदाय के लोग इस नगरी को महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल मानते हैं। काशी से लगभग आठ किलोमीटर दूर, सारनाथ में भगवान बुद्ध ने अपने प्रथम उपदेश धर्म चक्र प्रवर्तन सूत्र का शुभारंभ किया था। जैन धर्म के मानने वाले भी इसे बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं। इनके चार तीर्थंकर यहीं पैदा हुए थे। शताब्दियों बाद दक्षिण भारत से शंकराचार्य ने यहाँ पदार्पण किया था और अध्यात्म, दर्शन एवं संस्कृति की नये सिरे से प्राण प्रतिष्ठा की थी।

विशिष्ट तीर्थ स्थल होने के साथ काशी की संस्कृति, साहित्य और उसकी व्यापारिक महत्ता का वर्णन पुराणों और प्राचीन संस्कृत साहित्य में भरा पड़ा है। काशी सदा से विद्या का केन्द्र और भक्तों, संतों तथा दार्शनिकों का नगर रहा है। उत्तर भारत में संभवतः कोई दूसरा नगर नहीं है, जिसने काशी की भाँति संस्कृत विद्या की परंपरा को निर्बाध पल्लवित रखा हो। एक समय था, जब काशी वैदिक धर्म का केंद्र थी और यहाँ के आचार्य दूर-दूर राज्यों एवं देशों में जाकर अपने धर्म का प्रचार- प्रसार करते थे। देश-विदेश के बड़े- बड़े विद्वान यहाँ आकर विद्याध्ययन करते थे तथा यहाँ के आचार्यों से शास्त्रार्थ करते थे। इसके प्रमाण हमें पुराणों एवं धार्मिक ग्रंथों में भी मिलते हैं। यही नहीं, यहाँ के विद्वान तक्षशिला विश्वविद्यालय में संस्कृत, साहित्य, आयुर्वेद, दर्शन आदि विषयों की शिक्षा देते थे।

वर्तमान शताब्दी के आरंभ में महान देशभक्त, विद्यानुरागी और शिक्षाविद् पण्डित मदनमोहन मालवीय के अथक प्रयत्नों के फलस्वरूप, पुनः इसी नगरी में एक आधुनिक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिसके उद्घाटन पर महात्मा गाँधी भी उपस्थित थे और उसी समय भारत के वाइसराय लार्ड हार्डिंग्ज के सम्मुख, गाँधी जी ने अपने ऐतिहासिक भाषण देकर देश की स्वतंत्रता की लड़ाई का बिगुल बजाया था। बाद में काशी में ही महात्मा गाँधी ने काशी विद्यापीठ का शिलान्यास किया। आज काशी हिंदू विश्वविद्यालय में कला, विज्ञान तथा इंजीनियरिंग के विषयों का अध्ययन करने के लिए बड़ी संख्या में विदेशों से भी छात्र आते हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

इस नगर की उत्पत्ति कब हुई, यह बताना बड़ा कठिन है। पुराणों में काशी नाम का संबंध काशी नाम का संबंध काशी राज से होने का उल्लेख है। कहते हैं कि इसी वंश में आयुर्वेद, के प्रवर्तक महाराज धन्वंतरि का जन्म हुआ था, जिन्होंने मानव जाति के रोग- दोष निवारण के लिए अथक परिश्रम कर आयुर्वेद की सर्वप्रथम रचना की। ऐसा प्रतीत होता है कि एक समय में काशी विश्वविख्यात राज्य था और धर्म एवं विद्या का इतना महान केंद्र था कि सभी प्रकार के ज्ञान के लिए संसार भर के लोगों की दृष्टि काशी की ओर लगी रहती थी। महाभारत में भी काशी राज्य का उल्लेख है।

ऐतिहासिक आलेखों से प्रमाणित होता है कि ईसा पूर्व की छठी शताब्दी में काशी भारतवर्ष का बड़ा ही समृद्धशाली और महत्वपूर्ण राज्य था। मध्य युग में यह कन्नौज राज्य का अंग था और बाद में बंगाल के पाल नरेशों का इस पर अधिकार हो गया था। सन् ११९४ में शहाबुद्दीन गोरी ने इस नगर को लूटा- पाटा और क्षति पहुँचायी। मुगल काल में इसका नाम बदल कर मुहम्मदाबाद रखा गया। बाद में इसे अवध दरबार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा गया। बलवंत सिंह ने बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दिया और इसके उपलक्ष्य में काशी को अवध दरबार से स्वतंत्र कराया। सन् १९११ में अंग्रेजों ने महाराज प्रभुनारायण सिंह को बनारस का राजा बना दिया। सन् १९५० में यह राज्य स्वेच्छा से भारतीय गणराज्य में शामिल हो गया।

काशी विभिन्न मत-मतान्तरों की संगम स्थली रही है। विद्या के इस पुरातन और शाश्वत नगर ने सदियों से धार्मिक गुरुओं, सुधारकों और प्रचारकों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। भगवान बुद्ध और शंकराचार्य के अलावा रामानुज, बल्लभाचार्य, संत कबीर, गुरु नानक, तुलसीदास, चैतन्य महाप्रभु, रैदास आदि अनेक संत अपनी ज्ञान पिपासा शांत करने इस नगरी में आये। जैनियों ने इस नगरी की प्रतिष्ठा में यहाँ एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया। गोस्वामी तुलसीदास ने राम भक्ति की रस- धार प्रवाहित करने के लिए काशी को ही अपना कार्य- क्षेत्र बनाया था तथा रामचरित मानस के रूप में भारतीय संस्कारों का उदात्त आदर्श एवं स्वरूप जनता के समक्ष रखा। संत कबीर की जन्मस्थली भी यहाँ है और आज भी उनकी समाधि तथा मठ उनकी याद दिलाते हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

भारतीय स्वातंत्रता आंदोलन में भी काशी सदैव अग्रणी रही है। राष्ट्रीय आंदोलन में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रों का योगदान स्मरणीय है। सच तो यह है कि इस नगरी का हर व्यक्ति देश की आजादी के लिए समर्पित था। सन् १९३२ के सत्याग्रह में श्याम नंदन तथा राम नंदन पुलिस की गोली के शिकार हुए और देश बलिवेदी पर शहीद हो गये। सन् १९४२ के आंदोलन में सर्वश्री विश्वनाथ, काशी प्रसाद, बैजनाथ खत्री, हीरालाल वर्मा, रमापति, सिद्धराज आदि अनेक वीर सेनानियों ने अपनी जान देकर देश की स्वतंत्रता की लड़ाई को नयी स्फूर्ति और चेतना दी। इस नगरी को क्रांतिकारी सुशील कुमार लाहिड़ी, अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद तथा जितेंद्र नाथ सान्याल सरीखे वीर सपूतों को जन्म देने का गौरव प्राप्त है।

इनके अतिरिक्त अनेक स्वतंत्रता सेनानी यहाँ हुए, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को स्वतंत्रता संग्राम में ही लगा दिया। इनमें से कुछ के नाम मैं यहाँ अवश्य लेना चाहूँगा। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जैसे विराट एवं विलक्षण महापुरूष के अतिरिक्त राजा शिव प्रसाद गुप्त, बाबूराव विष्णु पराड़कर, श्री श्रीप्रकाश, डॉ. भगवान दास, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. संपूर्णानंद, कमलेश्वर प्रसाद, मन्मथ नाथ गुप्त, मुकुटबिहारी लाल तथा पंडित कमलापति त्रिपाठी, प्रभृति महापुरूषों ने स्वतंत्रता संग्राम में जो योगदान दिया है, वह इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

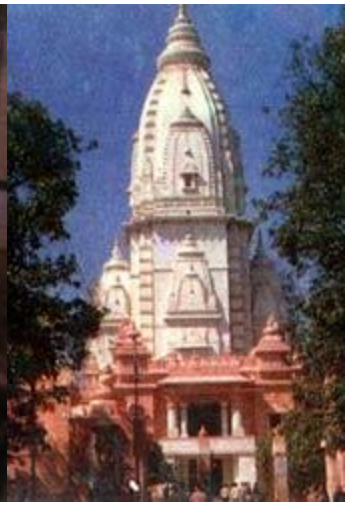

वाराणसी गायन एवं वाद्य दोनों ही विद्याओं का केंद्र रहा है। सुमधुर ठुमरी भारतीय कंठ संगीत को वाराणसी की विशेष देन है। इसमें धीरेंद्र बाबू, बड़ी मोती, छोती मोती, सिद्धेश्वर देवी, रसूलन बाई, काशी बाई, अनवरी बेगम, शांता देवी तथा इस समय गिरिजा देवी आदि का नाम समस्त भारत में बड़े गौरव एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। इनके अतिरिक्त बड़े रामदास तथा श्रीचंद्र मिश्र, गायन कला में अपनी सानी नहीं रखते। तबला वादकों में कंठे महाराज, अनोखे लाल, गुदई महाराज, कृष्णा महाराज देश- विदेश में अपना नाम कर चुके हैं। शहनाई वादन एवं नृत्य में भी काशी को ही महत्ता देनी होगी, जहाँ नंद लाल, उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ तथा सितारा देवी जैसी प्रतिभाएँ पैदा हुई हैं।

काशी नगरी संस्कृत साहित्य का केंद्र तो रही ही है, लेकिन इसके साथ ही इस नगर ने हिंदी तथा उर्दु में अनेक साहित्यकारों को भी जन्म दिया है, जिन्होंने यहीं रहकर साहित्य सेवा की तथा देश में गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त किया। इनमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, श्याम सुंदर दास, राय कृष्ण दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, रामचंद्र वर्मा, बेचन शर्मा 'उग्र', विनोदशंकर व्यास, कृष्णदेव प्रसाद गौड़ तथा डॉ. संपूर्णानंद उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त उर्दू साहित्य में भी यहाँ अनेक जाने- माने लेखक एवं शायर हुए हैं। जिनमें मुख्यतः श्री विश्वनाथ प्रसाद शाद, मौलवी महेश प्रसाद, महाराज चेतसिंह, शेखअली हाजी, आगा हश्र कश्मीरी, हुकुम चंद्र नैयर, प्रो. हफीज बनारसी, श्री हक बनारसी तथा नजीर बनारसी का नाम आता है।

काशी के कारीगरों के कला- कौशल की ख्याति सुदूर प्रदेशों तक में रही है। काशी आने वाला कोई भी यात्री यहाँ के रेशमी किमखाब तथा जरी के वस्त्रों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। यहाँ के बुनकरों की परंपरागत कुशलता और कलात्मकता ने इन वस्तुओं को संसार भर में प्रसिद्धि और मान्यता दिलायी है। विदेश व्यापार में इसकी विशिष्ट भूमिका है। इसके उत्पादन में बढ़ोत्तरी और विशिष्टता से विदेशी मुद्रा अर्जित करने में बड़ी सफलता मिली है। रेशम तथा जरी के उद्योग के अतिरिक्त, यहाँ पीतल के बर्तन तथा उन पर मनोहारी काम और संजरात उद्योग भी अपनी कला और सौंदर्य के लिए विख्यात हैं। इसके अलावा यहाँ के लकड़ी के खिलौने भी दूर- दूर तक प्रसिद्ध हैं, जिन्हें कुटीर उद्योगों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं।

काशी में गंगा तट पर अनेक सुंदर घाट बने हैं, जिनमें असी, तुलसी, हनुमान, हरिश्चंद्र, दशाश्वमेध, मानमंदिर, मणिकर्णिका, सिंधिया तथा राजघाट मुख्य हैं। ये सभी घाट किसी- न- किसी पौराणिक या धार्मिक कथा से संबंधित हैं। इन घाटों के जीर्णोद्धार तथा अनुरक्षण की आवश्यकता का अनुभव कुछ दिनों से किया जा रहा था। अब राज्य सरकार से सार्वजनिक निर्माण विभाग का एक पृथक प्रभाग केवल घाटों का ही कार्य देखता है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

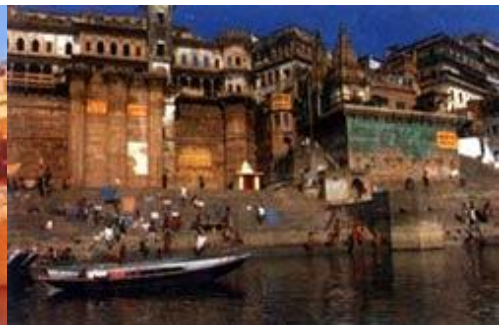

काशी, पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। विदेशी पर्यटक भी यहाँ आकर इसकी मौज- मस्ती का भरपूर आनंद लेकर जाते हैं। यहाँ अनेक धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सुंदर दर्शनीय स्थल है, जिन्हें देखने के लिए देश के ही नहीं, संसार भर से पर्यटक आते हैं और इस नगरी तथा यहाँ की संस्कृति की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। कला, संस्कृति, साहित्य और राजनीति के विविध क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान बनाये रखने के कारण काशी अन्य शहरों की अपेक्षा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। देश की राष्ट्रभाषा हिंदी की जननी संस्कृत की उद्भव स्थली काशी सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। देश की जनता के मन में काशी ने एक पवित्र विश्वास पैदा किया है -- ऐसा विश्वास जो मानवीय चेतना को धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था से जोड़ता है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.